विकलांग बालकों की समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन
(बिलासपुर नगर के परिप्रेक्ष्य में)

*डॉ. अभिजीत भौमिक **श्रीमती सुनिता भौमिक

विकलांग बालक से अभिप्राय उन बालकों से है, जो किसी भी शारीरिक व मानसिक रोगों के कारण मन्दबुद्धि का परिचय देते हैं एवं आयु के अनुभव तथा सामान्य स्तर के भी कार्य करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं, ऐसे बालक अपने परिवार, विद्यालय एवं समुदाय में समायोजित नहीं हो पाते। उनमें एक तरह की हीन भावना का जन्म होने लगता है। उध ार परिवार के सदस्य भी उन्हें उपेक्षा व बोझ की नजर से देखते हैं और वे उस उपेक्षा तथा अपमान के कारण परिवार, विद्यालय तथा समाज से ही घृणा करना प्रारंभ कर देते हैं। अतः हमें इस समस्या को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देख व समझकर हल करना चाहिए, तभी हम इस हेतु सार्थक व सकारात्मक प्रयास कर सकते है।

विकलांग बालकों की समस्यायें :— बुद्धि—लब्धि की दृष्टि से 70 से कम, बुद्धि—लब्धि (आई.क्यू.) वाले बालकों को मानसिक रूप से विकलांग व पिछड़ा हुआ माना जाता है। बालक अपंग हो, अंधा हो, आधा अंधा हो, पूर्ण बहरे हों या अपूर्ण बहरे हों या वे मानसिक रूप सं अपंग या विकलांग हो, ऐसे बालाकों की समाज से समायोजन करने की समस्या से जूझना पड़ता है। इन्हें अपने परिवार के सदस्यों से डाट व उपेक्षा की भावना देखने को मिलती है। उन्हें समाज के ही दूसरे बच्चों के साथ तालमेंल बिठाने की समस्या होती है तथा जिस विद्यालय में वह अध्ययन करते हैं, वहॉ भी वे दूसरे बच्चों को अपने से अलग ही पाते हैं, जिससे वे अपने को दूसरे से अलग अनुभव करने लगते हैं।

शोध का उद्देश्य :—विकलांग बालक हमारे समाज का ही एक सदस्य है। यदि शारीरिक व मानसिक दोषों के कारण या दुर्घटनावश उसे समाज के अन्य सदस्यों से अलग स्थिति प्राप्त हुई है तो दोष बालक की नहीं, अपितु हमें इनके नियती की मर्जी समझ उनके विकास में सहायता करनी चाहिए। इसी उद्देश्य के कारण शोधकर्ता ने उक्त विषय पर अध्ययन व कार्य आरम्भ कर विकलांग बालकों को समस्या, कारण व समाधान पर शोध किया एवं निष्कर्ष निकाल एक समाजशास्त्री के रूप में इस समस्या को समाज के मुख्य धारा से जोड़ते हुए समाधान का प्रयास किया।

शोध की विधि :— प्रस्तुत विषय में शोधकर्ता ने बिलासपुर नगर के 50—50 विकलांग (शारीरिक व मानसिक) बालकों से सम्पर्क कर सीधे बालकों व उनके अभिभावकों से प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार व अवलोकन के माध्यम से समस्याओं का अध्ययन, विश्लेषण कर निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये।

विकलांगता के कारण :— प्रस्तुत शोध विषय में 50—50 के वर्ग शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि उनके विकलांगता के कारण क्या है ?

क्र.	विकलांगता के कारण	प्रतिशत
1.	वंश परम्परा	42
2.	मानसिक आघात	22
3.	जन्म के समय आघात	12
4.	अन्य कारण	24

प्रस्तुत शोध में हमने पाया कि 42 प्रतिशत विकलांग बालक वंश परम्परा के कारण ही शारीरिक व मानसिक हीनता का शिकार हुए हैं अर्थात् उनके पूर्वज या रिश्तेदार पूर्व में या वर्तमान में इसी समस्या से ग्रसित रहे है या है। वहीं पर 22 प्रतिशत विकलांग बालकों के विकलांग होने का कारण जन्म के पश्चात स्वस्थ अवस्था में ही दुर्घटनावश विकलांग हो जाना पाया गया। साथ ही शोधकर्ता ने पाया कि 12 प्रतिशत विकलांग बालक जन्म के समय ही अप्रशिक्षित नर्स व सह जचकी नहीं होने पर बालक के शारीरिक व मानसिक विकास में बाधा आयी। वहीं 24 प्रतिशत विकलांग बालकों के विकलांगता के कारण उनकी गंभीर बिमारियॉ समाज में प्रेरणा की कमी, आस—पास का गन्दा वातावरण एवं ग्रन्थियों का विकार पाया गया।

विकलांगता की समस्यायें :—प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि विकलांग हुए बालकों की समस्यायें क्या—क्या है ? ताकि उसे समाज के सामने उचित समाधान हेतु प्रयास किया जा सके।

क्र.	विकलागता की समस्यायें	प्रतिशत
1.	समायोजन की समस्या	38
2.	शारीरिक देखभाल	22
3.	उचित शिक्षा प्रशिक्षण की कमी	18
4.	रोजगार के उचित अवसर	12
5.	स्वास्थ्यगत संस्था की कमी	10

वरीयता के आधार पर शोधकर्ता द्वारा उपरोक्त तथ्य, विकलांग बालकों से प्राप्त करने के साथ—साथ उनके अभिभावकों एवं अवलोकन के माध्यम से भी प्राप्त किये, जिनसे यह ज्ञात होता है कि 38 प्रशित बालक समाज, परिवार एवं शिक्षण संस्थान से उचित तालमेंल के अभाव का शिकार हुए हैं, तो वहीं

*प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, बलौदा जांजगीर
**शोधार्थी

22 प्रशित बालकों को अपने स्वयं के शरीर की देखभाल व दैनिक जरूतों को पूरा करने की समस्या से उन्हें जूझना पड़ता है, जबकि 18 प्रतिशत बालकों को उनकी शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु उचित शिक्षण प्रशिक्षण संस्था की कमी को सबसे मुख्य समस्या मानते हैं। साथ ही 12 प्रतिशत विकलांग बालक के सामने स्वावलम्बन की समस्या अर्थात रोजगार के उचित अवसर न प्राप्त होने को अपनी समस्या बताते हैं तो वही पर 10 प्रतिशत विकलांग बालकों एवं उनके अभिभावकों को ऐसा लगता है कि उनके आस–पास अच्छे स्वास्थ्य व प्रशिक्षण संस्थान नहीं है, जो उनके विकलांग व मन्दबुद्धि बच्चों को उचित प्रशिक्षण प्रदान कर सके।

निष्कर्ष :–शोधकर्ता ने निष्कर्षतः यह पाया कि विकलांगता स्वजनित न होकर प्राकृतिक ही होती है। इसे एक जटिल समस्या न समझ इसके समाधान हेतु पारिवारिक, सामाजिक व प्रशासनिक स्तर पर सार्थक प्रयास की आवश्यकता है, तभी हम इस समस्या को कम या खत्म कर सकते है।

सुझाव :–शोधकर्ता द्वारा उपर्युक्त शोध के माध्यम से जो विषय संबंधित समस्याओं एवं उनके कारण को जाना, उसके पश्चात निम्नलिखित बिन्दुओं में तथ्य संबंधित समस्याओं को सुलझाने हेतु सुझाव दिये जा सकते हैं:–

1. मानसिक रूप से पिछड़े माता–पिता की नसबंदी कर देनी चाहिए, ताकि मानसिक रूप से विकलांग बच्चों का जन्म ही न हो पाये।
2. परिवार, समाज एवं शैक्षणिक संस्थान के शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने यहॉ के मन्दबुद्धि विकलांग बच्चों को अन्य बच्चों की तुलना में ज्यादा समय व ध्यान देवें।
3. सरकार को चाहिए कि विकलांग बच्चों की स्वास्थ्यगत उचित देखभाल व सुधार हेतु ज्यादा स्वास्थ्य संस्थायें, प्रशिक्षण संस्थायें एवं डाक्टरों की नियुक्ति करें।
4. सरकार को विकलांग कोटे में वृद्धि करने हुए नौकरियों एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं में विकलांगों को ज्यादा रोजगार के अवसर प्रदान करायें।
5. बच्चों के स्वयं के देखभाल हेतु स्वयं उन्हें एवं माता–पिता को प्रशिक्षण प्राप्त करने करते रहना चाहिए।
6. स्वस्थ मानसिक विकास हेतु बच्चों को उन्हीं के स्तर के खेल सामाग्री पाठ्य सामग्री व मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराते रहना चाहिए, जिससे उनमें कुछ नये व बेहतर करने की ललक बरकरार रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–भटनागर डॉ. ए.बी.

2. छात्र का विकास एवं शिक्षण प्रक्रिया –शर्मा डॉ. आर.ए.

3. शिक्षा मनोविज्ञान –भटनागर सुरेश

4. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक –सक्सेना एन.आर.एस.

5. विशिष्ठि बालक का समाज – त्रिवेदी डॉ. एस.आर.